पर्वतीय तीर्थस्थलों पर प्रदूषक का बढ़ता संकट

नीलम जैन
गाजियाबाद, (उत्तर प्रदेश)

मेरे मन में बहुत तमन्ना थी कि उत्तर भारत के चार धाम रह गये, बाकी तो सब घूम लिया, न जाने कभी बद्रीनाथ, केदारनाथ हम जा भी पायेंगे। पर भगवान ने यह इच्छा इस साल पूरी कर दी। देहरादून रहने वाले भाई ने हम सब भाई–बहनों की बुकिंग करवा दी। 27 अप्रैल, 2023 को पहला जत्था केदारनाथ जाना था, इत्तिफाक से हमें 29 तारीख से रजिस्ट्रेशन मिल गया। उत्तराखंड के इस पहाड़ी सौन्दर्य को देखकर लगा वास्तव में ये ही स्वर्ग है। केदारनाथ में शंकर भगवान की उस शिला को हाथ लगाकर छूने में जो सुख अनूभूति हुई उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। चारों तरफ से मन्दिर को बर्फ की ऊंची–ऊंची शिखरों ने घेरा हुआ है। बीच में कभी–कभी सूर्य देवता का दर्शन वातावरण और सौन्दर्य को चार चांद लगा देता है। वहां से सड़क के रास्ते बद्रीनाथ पहुंचे। रास्ता लम्बा है, तो राह में बीच में कई जगह रूकना पड़ा। पर ये क्या एक बार एक जगह कार रोकी, हम सब नीचे उतरे, थोड़ा समतल क्षेत्र था, वहां बैठने के लिए चादर बिछाने लगे, पर कोई जगह नहीं मिली। चादर बिछाने के लिये, सब ओर खाने–पीने की प्लास्टिक की थैलियां, चिप्स और भजिया के खाली पैंकिंग की थैलियां, पानी की खाली प्लास्टिक की बोतलें और ड्रिंक्स के कैन पड़े हमारा मुंह चिढ़ा रहे थे। जिस नैसर्गिक सौन्दर्य को हम निहारने आये उसी को इतना गंदा कैसे कर सकते हैं। हम मैदानी इलाकों से इतने सैलानी व श्रद्धालु वहां आते हैं, पर इतनी गन्दगी वहां छोड़ते हैं; कोई अन्दाजा भी नहीं लगा सकता। सबसे ज्यादा दुःख हुआ शराब की खाली बोतलों को देखकर। शराब पीकर गाड़ी चलाना कितना खतरनाक है ये तो सब जानते हैं। हरे–भरे पहाड़ों से घिरे इन खूबसूरत दृश्यों के बीच जगह–जगह ये गन्दगी मानव की सभ्यता पर कलंक है। क्या ऐसा नहीं हो सकता कि वह कूड़ा इकट्ठा करके अपने साथ कार में ले आयें और जहां कूड़ेदान दिखाई दे वहां डाल दें, ताकि पहाड़ों का ये नैसर्गिक सौंदर्य बरकरार रहे। क्या मैदानी इलाकों से लोग इतनी दूर शराब पीने आते हैं या इस खूबसूरती को बरबाद करने, कब अक्ल आयेगी मानव को। जब बद्रीनाथ पहुंचे, वहां गरम पानी का कुंड देखा, उसमें मुंह–हाथ, धोए, पर ये क्या आस–पास चारों ओर कपड़े, ही कपड़े अर्थात् महिलाओं की साड़ियां पड़ी थीं। कुछ लोगों में ये अन्धविश्वास है कि अपने पहने हुए कपड़े तीर्थ स्थल पर ही नहाकर वहीं छोड़ दो इससे तुम स्वस्थ रहोगे। अरे मानव को कौन समझाये कि तीर्थस्थलों को गन्दा करने से जब दूसरे लोग वहां नहायेंगे, या मुंह–हाथ धायेंगे, तो उनके कपड़ों की गन्दगी उस पवित्र जल को प्रदूषित नहीं कर रही क्या। हाय री ये आस्था! और तो और जगह–जगह लोग पूजा की सामग्री, खाली प्लास्टिक की थैलियों से सारे घाट को गन्दा कर देते हैं। खुद को बैठने की जगह मिल जाए फिर जो गन्दगी वहां करके जायेंगे क्या मजाल जो दूसरा पर्यटक वहां आराम से पूजा कर ले। हमें सुधरना होगा। जब एक–एक प्राणी की अंतरात्मा जागेगी, सफाई के लिए जागरूक होगी, तभी कुछ सुधार होगा। केवल सरकार के भरोसे रहने से कुछ नहीं होने वाला। जगह–जगह पान की पीक थूकना, गन्दगी फैलाना सभ्य मानव को शोभा नहीं देता। हमें अपनी नदियों की साख बचानी होगी। जब भी हमारे भारत के कोई त्यौहार आता है या विशेष पूजा के दिन आते हैं। हर घर से लक्ष्मी पूजा करने के बाद लक्ष्मी–गणेश की मिट्टी की मूर्ति, फोटो को उठा कर लोग पीपल के पेड़ के नीचे रख आते हैं, कितनी नासमझी है, जिनकी तुम इतनी श्रद्धा से पहली रात पूजा करते हो उन्हीं भगवान को बेरहमी से घर से बाहर सड़क के किनारे, पार्कों में, चौराहों पर नदियों में डालने चल पड़ते हो। कितना पाप लगता है, भगवान ही जानते हैं। कुछ समय पहले मैंने समाचार पत्र में बम्बई के 35 वर्षीय आफरोज शाह के बारे में पढ़ा था जिन्होंने अकेले ही सात–आठ साल पहले समुद्र तट पर बिखरे पड़े हर तरह के कचरे को साफ करने का अभियान चलाया, देखते–देखते उनके साथ 300 लोग जुड़ गये। हजारों टन कचरा वर्सोवा बीच और अन्य स्थलों से साफ करवाया गया। संयुक्त राष्ट्र संघ ने उन्हें पर्यावरण सम्मान "चैंपियन ऑफ द अर्थ" से सम्मानित किया। यह एक बहुत अच्छा प्रयास है। ऐसा जोश हर नागरिक में होना चाहिए। चाहे पानी हो, चाहे पहाड़ हों, झरने हों, पेड़–पौधे हों हमें उनकी सफाई करने का बीडा उठाना होगा। कम से कम हम अच्छा काम न करें पर गन्दगी तो न फैलायें। हमें पर्वतों व अपने देश की पवित्र नदियों को प्रदूषित होने से बचाना होगा।